महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

---

हिंदी ने बनाया अखिल भारतीय -सुनील गंगोपाध्याय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में आयोजित 'सुनील गंपोपाध्याय से संवाद' कार्यक्रम में बाएं से डा. कृपाशंकर चौबे, गंगोपाध्याय, केदारनाथ सिंह व सुबोध सरकार।

वर्धा, 17 नवंबर 2011 : एक समय परंपराभंजक की पहचान लेकर उभरे बांग्ला के वरिष्ठ कवि और कथाशिल्पी सुनील गंगोपाध्याय ने कहा है कि हिंदी ने उन्हें अखिल भारतीय बनाया। पहले उनकी किताबें हिंदी में अनूदित हुईं और फिर हिंदी से मराठी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं में। इसलिए वे हिंदी के प्रति कृतज्ञ हैं। गंगोपाध्याय 16 नवंबर को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के संवाद कार्यक्रम में अध्येताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे।

तारकेश्वर मिश्र के प्रश्न के उत्तर में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि आज बंगाली घरों में अंग्रेजी का प्रभाव बुरी तरह घर कर गया है। बंगाली युवक भारतीय भाषा संस्कृति के मुकाबले यूरोप की भाषा-संस्कृति को महत्व देने लगा है। बंगाली युवा वर्ग की रुचि बांग्ला साहित्य पढ़ने के बाद सीधे यूरोप के साहित्य में हो जाती है,

यही कारण है कि बांग्ला में हिंदी साहित्य का अनुवाद लाने में बड़े प्रकाशक उदासीनता दिखाते हैं। गंगोपाध्याय ने मोहम्मद इसराइल के सवाल के जवाब में स्वीकार किया कि बांग्ला की जितनी रचनाएं हिंदी में अनूदित होती हैं, उतनी हिंदी की रचनाएं बांग्ला में अनूदित नहीं हो पाती। हिंदी की बांग्ला से एकतरफा संबंध की शिकायत जायज है। उन्होंने कहा कि हिंदी की अनेक अच्छी रचनाओं के बांग्ला अनुवाद की बहुत जरूरत है। अच्छे पाठक की पहचान उनके पढ़ने की रूचि से होती है।

बांग्ला के प्रसिद्ध कवि और सिटी कालेज कोलकाता में अंग्रेजी के प्रोफेसर सुबोध सरकार के सवाल के जवाब में गंगोपाध्याय ने कहा कि टेलीविजन के आकर्षण और इसकी चमक ने युवाओं में साहित्यिक रूचि काफी कुछ छीन ली है, सिर्फ युवा ही नहीं प्रौढ़ वर्ग भी इसके आकर्षण में आ गया है। लोगों की रुचि कम होने से साहित्यिक पत्रिकाओं का सिलसिला भी सिकुड़ने लगा और अब हालात सामने हैं। हालांकि हिंदी में साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रसार के कम होने के बावजूद बांग्ला में साहित्यिक पत्रिकाओं का सिलसिला ठीक-ठाक है, कविताएं भी अच्छी लिखी जा रही हैं, लेकिन प्रौढ़ गद्य कम दिखाई देता है।लोरेटो कालेज, कोलकाता की हिंदी विभागाध्यक्ष डा.राखी राय हल्दर के प्रश्न के जवाब में गंगोपाध्याय ने कहा कि वे अपनी कहानियों में जब गांव की परिकल्पना करते हैं तो बचपन का माइचपाड़ा गांव बरबस याद आता है, जहां मुश्किल ढाई तीन साल रहे थे। आज भी उसकी यादें ताजा हैं। वहां के रास्ते, पेड़ खेत तालाब, के बिंब दिमाग में उभरते हैं। फरीदपुर जिले का माइचपाड़ा गांव अब बांग्लादेश में हैं। सुशील कांति के प्रश्न के उत्तर में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि बंटवारे की त्रासदी की आवाज उनकी कहानियों में सुनी जा सकती है। डा. संजय जायसवाल के सवाल के जवाब में सुनील गंगोपाध्याय ने कहा कि अभी तो उनका सर्वश्रेष्ठ लेखन आना बाकी है।हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह के एक सवाल के जवाब में ढाई सौ पुस्तकों के लेखक गंगोपाध्याय ने कहा कि उनकी कथाकृतियों पर 'अरण्येर दिनरात्रि', 'प्रतिद्वंद्वी', 'सबुज द्वीपेर राजा', 'जीवन जे रकम', 'अर्जुन', 'श्याम साहब', 'मधुमय' से लेकर 'मनेर मानुष' शीर्षक जो फिल्में बनीं और ये फिल्में सत्यजीत राय से लेकर गौतम घोष जैसे फिल्मकारों ने फिल्में बनाईं तो उन्होंने कहानी के ट्रीटमेंट के साथ मामूली परिवर्तन भी किया, इसका हक फिल्मकारों को है।

कार्यक्रम के आरंभ में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि यह संवाद श्रृंखला विवि के कुलपति विभूति नारायण राय के सुझाव पर शुरू की गई है। इसका उद्देश्य बांग्ला, उड़िया, असमिया सहित पूर्वोत्तर की भाषाओं के साथ हिंदी का संवाद बढ़ाना और तदनुसार सांस्कृतिक सम्बन्धों का निर्माण करना है। उन्होंने बताया कि मशहूर शक्सियतों व विद्याव्रतियों से संवाद की यह श्रृंखला हर महीने आयोजित की जाएगी। इससे शोधार्थियों व अध्येताओं को अपनी जिज्ञासाएं शांत करने का अवसर भी मिलेगा।

बी एस मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी